Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

एलियंस की वैज्ञानिक-परिकल्पना और उसका यथार्थ

डॉ0 अरुण कुमार मिश्र[1]

[1]अध्यक्ष, गणित विभाग, पं0 उगम पाण्डेय महाविद्यालय, (बी0आर0ए0बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर), मोतिहारी- 845401.

सारांश

आदमी के प्रादुर्भाव की व्याख्यायें प्रारंभ से ही समय-समय पर होती रही हैं। ब्रिटेन के अनेक वैज्ञानिकों की मान्यता है कि सभी मनुष्य एलियंस हैं, जो विभिन्न ग्रहों से धरती पर आये हैं। कार्डिपफ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर चन्द्रा का कहना है कि नये शोध् ''ओवरवेलमिनगले'' से पता चला है कि हम सभी लोग दूसरे ग्रहों से आकर धरती पर बसे हैं। प्रोफेसर चन्द्रा एस्ट्रोबायलोजिस्ट हैं। प्रोफेसर चन्द्रा का यह भी मानना है कि 3,800 मिलियन वर्षों पूर्व अन्तरिक्ष में बीजों की उत्पत्ति दिखलाई गयी थी। अनेक माइक्रोब्स बाहरी अन्तरिक्ष से इस धरती पर आये तथा उन्हीं से आदमियों के जीवन के बीज बने। यह प्रमाण कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय शोध्-पत्रिका में भी छप चुका है। इसे बतलाने के लिए हमने एक मजाकिया ढंग का भी इजात किया है। हमेशा कोई न कोई नया बीज बनाता है, जिससे नये जीव की उत्पत्ति होती है। हमारी श्रृंखला भी उसी से जुड़ी हुयी है। इसके बाद भी, हमें ऐसा कोई वैज्ञानिक-तथ्य प्राप्त नहीं हो सका है जिससे कि यह जाना जा सके कि सबसे पहले इस जगह पर जिन्दगी कब प्रारंभ हुयी थी। इस लेख में 'एलियंस' के वैज्ञानिक-यथार्थ की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

परिचय

अन्तरिक्ष में अवस्थित अनेक आकाशीय-पदार्थ इस प्रकार के हैं, जिन्हें नहीं पहचाना जा सकता है। ये पदार्थ दृष्टिगोचर तो अवश्य हैं, परंतु इनकी पहचान कर पाना असंभव है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

वैज्ञानिकों ने इनकी पहचान के लिए समय-समय पर अनेक तर्क प्रस्तुत किय हैं। कभी ऐसे आकाशीय-पिण्डों को ''हवाई एयरक्राफ्ट'' कहा गया, तो कभी ऐसे आकाशीय पिण्डों को 'आकाशीय छल' कहा गया। परंतु वैज्ञानिकों के एक बड़े समुदाय ने शोधेपरान्त ऐसे आकाशीय पिण्डों को ''अनआइडेण्टिपफायड फ्रलाइंग आब्जेक्ट'' का नाम दिया है। वस्तुस्थिति यही है कि आज भी ऐसे आकाशीय पिण्ड वैज्ञानिकों के लिए ''रहस्य'' बने हुए हैं। इतना ही नहीं, आकाशीय पिण्डों से जुड़ी अजीबों-गरीब घटनाओं की गुत्थी वैज्ञानिकों के लिए अबूझ रहस्य भी बनी हुयी है। रह-रहकर वैज्ञानिक यह दावा करते हैं कि पृथ्वी से बाहर भी जीवन है। इस दावा से सन्दर्भित प्रश्न यह भी है कि क्या पृथ्वी के बाहर जो जीवन है, उसका आधर भी कार्बन है? यानि कार्बन आधरित लाइफ फार्म किसी अन्य तत्त्व पर आधरित जीवन भी तो कहीं हो सकता है। पृथ्वी पर कार्बन लाइफ-फार्म है। यानि समस्त जीवित प्राणियों तथा पेड़-पौधें की संरचना में कार्बन का योगदान सबसे अध्कि होता है। कार्बन के अतिरिक्त ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा हाइड्रोजन का भी अंश जीवित प्राणियों में होता है। कार्बन की प्रतिक्रिया अन्य तीनों तत्त्वों के साथ होती रहती है। इसी आधर पर वैज्ञानिक सुदूर अन्तरिक्ष में एलियन्स की खोज के लिए कार्बन बेस्ड लाइपफपफार्म को ही खोजने का आधार बनाते हैं।

प्रख्यात् भौतिक विज्ञानी स्टीपफेन हाकिंग का यह मानना है कि ब्राह्माण्ड में कई खरब आकाशगंगायें हैं और प्रत्येक आकाश-गंगा में करोड़ों तारे, ग्रह तथा उपग्रह हैं। ऐसे में यह कहना केवल पृथ्वी पर ही जीवन है, सही नहीं होगा। जीवन किसी ग्रह पर भी हो सकता है, किसी उपग्रह पर भी हो सकता है। धरती पर ही प्रमाण मिल चुके हैं कि जीवन उबलते पानी तथा जमी हुई बर्फ में भी हो सकता है। हॉकिंग का प्रश्न है-एलियंस देखने में कैसे लगते हैं? अमेरिका के सर्च फॉर एक्स्ट्रा टैरेस्ट्रियल इण्टेलिजेंस जैसे स्वायत्त सामूहिक संगठनों की सहायता से वैज्ञानिक निरंतर एलियंस की खोज में लगे हुए हैं। हॉकिंग का मानना है कि जूपिटर के बर्फ से ढके उपग्रह यूरोपा को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि अधिकतर ग्रहों पर जीवन सामान्य जीवों के रूप में होगा। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ ग्रहों पर जीव हमसे अधिक बुद्धिमान हों। यदि ऐसा है, तब वे अपने स्रोतों का उपयोग भी कर चुके होंगे। यह निष्कर्ष हमें यह मानने के लिए बाध्य कर देता है कि स्रोतों के समाप्त

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

होने पर जीव धरती जैसे किसी ग्रह की खोज में लगे होंगे। हॉकिंग के अनुसार, ''एलियंस तारों के बीच भी हो सकते हैं या यह भी हो सकता है कि स्पेस में घूम रहे हों।''

बुल्गारिया के वैज्ञानिकों की मानें तब तो हमें यह मान लेना पढ़ेगा कि एलियन्स धरती पर रहते हैं और उनका सम्पर्क पृथ्वी से अनिवार्य रूप में है। बुल्गारिया के साइंस एकेडमी के शोध्-संस्थान का यह कहना है कि एलियंस सर्वदा हमारे चारो ओर रहते हैं तथा प्रत्येक समय हमें देखते रहते हैं। एलियंस से हमें किसी प्रकार का खतरा नहीं है, बल्कि वे हमसे सहायता चाहते हैं। लेकिन हम उनसे सम्पर्क करने का कोई तरीका अब तक नहीं ढूँढ पाये हैं। संभावना यह भी है कि मनुष्य एलियंस से सम्पर्क करने का काई न कोई तरीका अगले 20-30 वर्षों में ढूँढ सकता है। वैज्ञानिकों का यह भी कहना कि एलियंस ने वैज्ञानिकों के तीस प्रश्नों के उत्तर भेजे हैं। वर्तमान समय में, शोध्कर्त्ता दुनिया भर में एक सौ पचास सर्कल्स का अध्ययन कर रहे हैं। महान् भौतिक विज्ञानी स्टीपफेन हॉकिंग ने यह कहते हुए कि सुदूर अन्तरिक्ष में एलियंस अवश्य है, चेतावनी दी है कि मनुष्य को एलियंस अथवा किसी अन्य ग्रह वासियों से दूर ही रहना चाहिए। ऐसा कर लेना धरती के लिए भी ठीक रहेगा। प्रो0 हॉकिंग के विचारों को नजर-अन्दाज तो नहीं किया जा सकता है, परन्तु यह भी सत्य है कि मनुष्य सर्वदा से ही अज्ञात की खोज करने का प्रयास करता रहा है अतः दूर रह लेने से सत्य को नहीं जाना जा सकता है। कनाडा के पूर्व रक्षा-मंत्रा पॉल हेलर का दावा है कि दूसरे ग्रहों के निवासी कई दशकों से धरती पर आते रहे हैं। हेलर ने हॉकिंग के अनुसार एलियंस को मनुष्य के लिए खतरनाक नहीं माना है, बल्कि मनुष्य के लिए मददगार बतलाया है। हेलर का दावा है कि हमें नुकसान पहुँचाने की जगह एलियंस के अन्तरिक्षयानों ने हमें ''माइक्रोचिप'' की खोज करने तथा सूचना-क्रान्ति लाने में सहायता की है। हॉकिंग ने अपने एक बयान में यह कहा था, ''यदि एलियंस धरती पर आ गये, तो परिणाम उससे कहीं ज्यादा होगा, तो परिणाम उससे कहीं ज्यादा होगा, जो कोलम्बस के अमेरिका पहुँचने पर हुआ था। यह अमेरिका के मूल-निवासियों के लिए अच्छा सिद्ध नहीं हुआ था।''

हॉकिंग के अनुसार, ''यदि मनुष्य एलियंस से सम्पर्क करने का प्रयास करेगा, तक एलियंस मनुष्य को उनके संसाधनों से बेदखल कर देंगे।'' हॉकिंग ने एक लघु फिल्म के माध्यम से यह कहा था कि एलियंस किसी महायोजना के द्वारा हमारे सौर मण्डल का उपयोग कर सकते हैं तथा हमारी शिकायत चीटियों की टोली की शिकायत के समान होगी। वेबसाइट-

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

संस्थापक, जूलियन असांजे के अनुसार, एलियंस पर अमेरिकी सरकार से प्राप्त कई गुप्त दस्तावेजों का खुलासा होना अभी बाकी है। इन गुप्त दस्तावेजों में अमेरिकी पायलटों की ओर से एलियंस के जमीन पर लैण्ड करने सम्बन्धी शिकायतें सम्मिलित हो सकती हैं।

रहस्यपूर्ण तथा अनसुलझे तथ्य: मात्रा एलियंस ही नहीं अनेकानेक रहस्य ऐसे हैं, जिनका आजतक वैज्ञानिक समाधन नहीं मिल पाया है।

भूत-प्रेत: भूत-प्रेत एक ऐसी कल्पना रही है, जो बचपन से लेकर बुढ़ापे तक आम आदमी के लिए एक अधूरी, लेकिन बेहद करीबी सत्य लगने वाली परिकल्पना लगती है। कई लोग इसे अंधविश्वाश का नाम देते हैं, तो कई इसे आत्मा का मुक्त नहीं हो पाना मानते हैं। इनसे जुड़ी कहानियाँ सुनकर हमारा बचपन रोचकता का पहला आभास प्राप्त करना है। एक छायादार शरीर जिसका सिर्फ अहसास किया जा सकता है, लेकिन इसका कोई प्रमाण मौजूद नहीं होता है।

बिगपफुट: लम्बा, बड़े बालों वाला तथा मनुष्य के समान लगने वाली एक आकृति जिसके बार में वैज्ञानिकों के बीच आज भी बहस जारी है 'बिगपफुट' के नाम से जानी जाती है। कुछ वैज्ञानिक इनके सत्य-अतित्व को स्वीकारते हैं, तो कुछ इनके अस्तित्व को नकारते हैं। यह मुख्यतः अमेरिका के सुदूर जंगलों में पाय जाते हैं। पूरे विश्व में इन्हें अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। तिब्बत और नेपाल में इन्हें 'येती' के नाम से जाना जाता है। आस्ट्रेलिया में इन्हें 'योवी' के नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि हजारों की संख्या में बिगपुफट होते हैं, परंतु आज तक इनके शरीर का अवशेष जंगलों में नहीं मिल सका है। बिगपफुट का वैज्ञानिक-पक्ष यह है कि विज्ञान आजतक इनके नहीं होने की बात को प्रमाणित नहीं कर सका है। विज्ञान के लिए इनके होने की पुष्टि करना अथवा नकार देना एक बहुत बड़ा पेंच बन चुका है।

बरमूडा त्रिकोण: बरमूडा त्रिकोण में हवाई जहाज, समुद्री जहाजों तथा नावों का अचानक गायब हो जाना विज्ञान के लिए आज भी रहस्य बना हुआ है। जहाज कहाँ चले जाते हैं? इस प्रश्न का आजतक कोई सम्यक् वैज्ञानिक समाधन नहीं मिल सका है। यदि जहाज किसी दुर्घटना के शिकार हो जाते, तब फॉरेसिंक साईंस के लिए यह बेहद काम होता। लेकिन उस त्रिकोण में न तो कोई फॉरेसिंक साइन्स काम करता है और न ही कोई अन्य तर्क काम

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

करता है। बरमूडा क्षेत्रा में 1945 के आसपास गायब अमेरिकी वायुसेना के एक छः सदस्यीय वायुयान मिशन के सम्बंध् में कुछ जानकारियाँ अवश्य मिली थीं, परंतु आज तक इस क्षेत्रा में हुई घटनाओं के प्रति वैज्ञानिकों के पास परिणाम के रूप में किसी प्रकार का तथ्य नहीं है। उनके पास अचानक लुप्त होने वाले जहाजों के सम्बंध् में कोई उत्तर नहीं है।

उड़नतश्तरियों का अस्तित्व: अपने सनसनीखेज खुलासों से अमेरिकी खेमे में हलचल मचाने वाला विकीलीक्स अब उड़नतश्तरियों के राज से परदा उठा सकता है। वेबसाइट संस्थापक, जूलियन असांजे ने ‘‘द गार्जियन’’ के साथ एक वेबचैट के दौरान यह कहा है कि उनकी वेबसाइट पर कई इण्टरनेट उपभोक्ताओं ने उड़नतश्तरी देखने का दावा किया है। परंतु इन्हें जारी करने के लिए दो शर्त्तें रखी गयी हैं-पहली, दस्तावेज आत्मकेन्द्रित नहीं हो, दूसरी इनमें सौ फीसदी सच्चाई हो। ब्रिटिश रक्षा मंत्रालय ने वर्ष 2009 में उड़नतश्तरी देखने सम्बंध्ति चार सौ मामले दर्ज किये थे। 2008 की तुलना में यह संख्या तीन गुणा अधिक थी। कुछ वेबसाइटों का दावा है कि असांजे द्वारा जारी किये गये दस्तावेजों में अमेरिकी पायलटों द्वारा दर्ज कराये तथ्य भी है।

निष्कर्ष

दुनिया के जाने-माने भौतिक विज्ञानी स्टीफेन हॉकिंग के हवाले से ‘संडे टाइम्स’ ने अपनी एक रिपोर्ट में बतलाया है कि एलियंस न सिर्फ दूसरे ग्रहों पर हो सकते हैं, बल्कि तारों पर भी हो सकते हैं। अथवा अन्तरिक्ष में भी घूम रहे हो सकते हैं। हॉकिंग का मानना है कि एलियंस सामान्य जानवर तथा माइक्रोब्स के समान हो सकते हैं। 2010 में एक लघु फिल्म के माध्यम से एलियंस के रहस्यों को समझाने का प्रयास हॉकिंग ने किया था। इसी लघु-फिल्म के एक दृश्य में यह दिखलाया गया है कि दो पैरों वाले जानवरों का एक झुण्ड घूम रहा है तथा उनको उड़नेवाली छिपकली जैसा दीखने वाले जीव उठा ले जाते हैं। फिल्म के एक अन्य दृश्य में दिखलाया गया है कि एक जीवन वृहस्पति ग्रह के जमे हुए बर्फ के अन्दर समुद्र के विशाल-क्षेत्र में फैले हुए हैं। यद्यपि ये सभी दृश्य काल्पनिक हैं, परंतु हॉकिंग इन दृश्यों के माध्यम से एक गम्भीर खतरे की तरफ आगाह करते हुए यह बतलाते हैं कि इन दूर ग्रहवासियों से यदि धरती का सम्पर्क हुआ, तो यह बेहद ही खतरनाक होगा।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

सन्दर्भ

1. Hawking, S.W, And Ellis, G.F.R., The Large Scale Structure of Space. Cambridge University Press, Cambridge. 1975.
2. Hawking, S.W; A Brief History of Time.
3. Hawking, S.W. The Grand Design, Bantom Books, U.S.A., 2010.
4. Hawking, S.W, The Theory of Everthing. Jaico Publishing House, Mumbai, 2009.
5. Joshi, Pankaj S., Gravitational Collapse and Space. Time Singularities. Cambridge University Press, Cambridge. 2007.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.